Global E-Journal of Social Scientific Research
Vol. 1| Issue 3| March 2025| pp 57-58

सिंधु घाटी सभ्यता एक प्राचीन नगर सभ्यता का विष्लेषण

Author: Nelisa Carls
Source: Global E-Journal of Social Scientific Research,
Vol. 1. Issue 3, March 2025, Page Nos. 57-58
Published by: Global Center for Social Dynamic Research

सिंधु घाटी सभ्यता, जिसे हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे प्राचीन और अत्यंत विकसित नगर सभ्यताओं में से एक थी। यह सभ्यता मुख्यतः सिंधु नदी और उसकी सहायक नदियों के किनारे विकसित हुई थी, और इसका काल लगभग 2600 ईसा–पूर्व से 1900 ईसा–पूर्व के बीच माना जाता है (Possehl, 2002)। सिंधु घाटी सभ्यता का प्रसार आधुनिक पाकिस्तान और भारत के गुजरात, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक फैला हुआ था। इस सभ्यता के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों में हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, धोलावीरा, राखीगढ़ी, कालीबंगन और लोथल शामिल हैं।

इस सभ्यता का सबसे आश्चर्यजनक पहलू इसका विकसित नगर नियोजन था। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसे नगरों को ग्रिड प्रणाली के अनुसार बसाया गया था, जिसमें सड़कों को समकोण पर काटा गया था और मकान योजनाबद्ध ढंग से बनाए गए थे (Kenoyer, 1998)। मकानों में निजी स्नानघर और जल निकासी की पक्की नालियाँ होती थीं। मोहनजोदड़ो में स्थित महान स्नानागारश इस सभ्यता की स्थापत्य दक्षता का उत्कृष्ट उदाहरण है। वहीं, धोलावीरा में नगर तीन भागों में विभाजित था, जो प्रशासनिक संरचना और सामाजिक वर्गीकरण की ओर संकेत करता है।

सिंधु घाटी सभ्यता की अर्थव्यवस्था कृषि, व्यापार और हस्तशिल्प पर आधारित थी। प्रमुख फसलों में गेहूं, जौ, कपास और खजूर शामिल थे, और सिंचाई के लिए नहरों तथा जलाशयों का प्रयोग किया जाता था (Gangal, Sarson, – Shukurov, 2014)। व्यापारिक संबंध मेसोपोटामिया (आधुनिक इराक), फारस और मध्य एशिया से स्थापित थे, जिसका प्रमाण लोथल बंदरगाह से प्राप्त होता है। सिंधु सभ्यता की मुद्राओं पर उकेरे गए पशुचित्र, प्रतीक और लिपि व्यापार और धार्मिक महत्व दर्शाते हैं। हस्तशिल्प की दृष्टि से कांस्य की नर्तकी, पशुपति मुहर और मनकों की कला अद्वितीय मानी जाती है।

धार्मिक दृष्टि से यह सभ्यता प्रकृति पूजा में विश्वास रखती थी। सिंधु सभ्यता में मातृ देवी, पशुपति (शिव रूपी आकृति), वृक्षों, सर्पों और बैलों की पूजा के प्रमाण प्राप्त होते हैं। इनसे स्पष्ट होता है कि समाज की धार्मिक अवधारणाएँ मुख्यतः जीवन–प्रदाताओं और प्राकृतिक शक्तियों से जुड़ी थीं। मंदिरों के स्पष्ट प्रमाण न मिलने से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि धार्मिक गतिविधियाँ संभवतः घरेलू स्तर पर सम्पन्न होती थीं (Marshall, 1931)।

सिंधु घाटी सभ्यता की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता इसकी लिपि थी, जो आज तक अपठनीय बनी हुई है। यह चित्रलिपि

प्रतीत होती है, जिसमें लगभग 400 प्रतीकों का प्रयोग हुआ है (Parpola, 1994)। लिपि के अपठनीय होने के कारण इस सभ्यता के धार्मिक, साहित्यिक और प्रशासनिक पक्षों पर अभी भी पूर्ण जानकारी उपलब्ध नहीं है।

इस सभ्यता के पतन के कारणों पर विद्वानों में मतभेद है। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि जलवायु परिवर्तन, नदियों की दिशा बदलना, बाढ़ या अकाल जैसी प्राकृतिक आपदाएँ इसके पतन का कारण बनीं। वहीं कुछ विद्वान आंतरिक सामाजिक विघटन और आर्य आक्रमण के सिद्धांत को स्वीकार करते हैं ँright, 2010)। हालांकि, इस विषय पर अभी और शोध की आवश्यकता है।

अंततः, सिंधु घाटी सभ्यता न केवल भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक जड़ों का प्रमाण है, बल्कि यह विश्व इतिहास की एक महत्वपूर्ण धरोहर भी है। इसकी उन्नत नगर व्यवस्था, वैज्ञानिक सोच, कला और संस्कृति आज भी अध्ययन और प्रेरणा का विषय हैं। इसका गहन अध्ययन हमें यह समझने में मदद करता है कि मानव समाज कितनी गहराई से प्राचीन काल में भी संगठित और सभ्य था।

संदर्भ

1. *गंगल, के., सार्सन, जी. आर., और शुकरोव, ए. (2014)। सिंधु नगरिकता का स्थानिक और कालिक वितरण। क्लाइमेट ऑफ द पास्ट, 10(2), 459द्द470। https://doi-org/10-5194/cp&10&459&2014*
2. *केनोयर, जे. एम. (1998)। सिंधु घाटी सभ्यता के प्राचीन नगर। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।*
3. *मार्शल, जे. (1931)। मोहनजोदड़ो और सिंधु सभ्यता। आर्थर प्रोब्सथेन।*
4. *पारपोला, ए. (1994)। सिंधु लिपि का विश्लेषण। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।*
5. *पॉसेल, जी. एल. (2002)। सिंधु सभ्यतारू एक समकालीन दृष्टिकोण। रोमन अल्टामीरा।*
6. *राइट, आर. पी. (2010)। प्राचीन सिंधुरू नगरीकरण, अर्थव्यवस्था और समाज। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।*